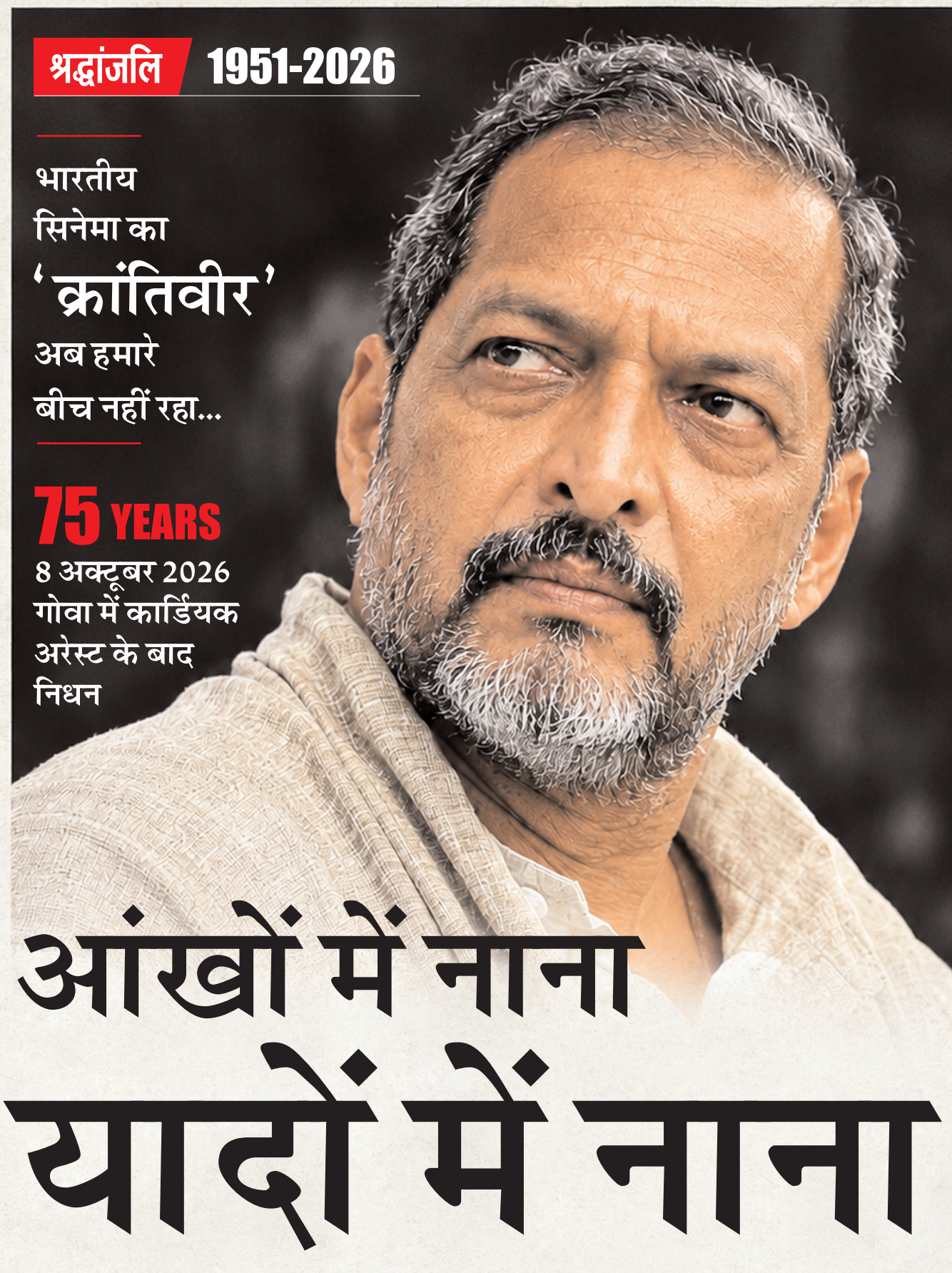
श्रद्धांजलि 1951-2026

भारतीय सिनेमा का 'क्रांतिवीर' अब हमारे बीच नहीं रहा...

75 YEARS

8 अक्टूबर 2026 गोवा में कार्डियक अरेस्ट के बाद निधन



"मुझे मालूम है कि जाना है और 12 मन लकड़ी लगने वाली है. यही मेरी पूरी प्रॉपर्टी है. इसी के साथ चला जाऊंगा.'

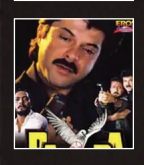
यादगार फिल्में

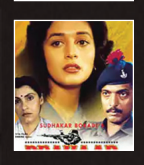


गमन (1978)



अंकुश (1986)


परिंदा (1989)


प्रहार द फाइनल अटैक (1991)



तिरंगा (1993)



क्रांतिवीर (1994)

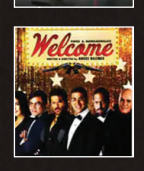


अग्निसाक्षी (1996)



खामोशी द म्यूजिकल (1996)


अब तक छप्पन (2004)



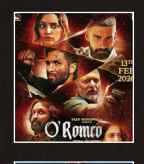
वेलकम (2007)



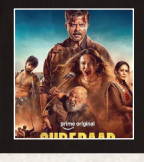
राजनीति (2010)



द अटैक ऑफ 26/11 (2013)



ओ रोमियो (2026)


सुबेदार (2026)

आंखों में नाना यादों में नाना

कुछ कलाकार किरदार निभाते हैं, कुछ किरदार में सच भर देते हैं. नाना पाटेकर दूसरी किस्म के थे. आवाज में ठहराव, आंखों में आग और संवादों के बीच की खामोशी में पूरा किरदार. अब वह खामोशी हमेशा के लिए ठहर गई है .नाना पाटेकर का जाना अभिनय की उस परंपरा के लिए बड़ी क्षति है, जिसमें कलाकार अपने चेहरे से ज्यादा अपने किरदार से पहचाना जाता है. उन्होंने पर्दे पर गुस्सा भी दिखाया, दर्द भी, हास्य भी और टूटते हुए इंसान की खामोशी भी. उनकी आवाज और संवाद भले अब नए किरदारों में सुनाई न दें, लेकिन भारतीय सिनेमा के कई यादगार किरदारों में नाना हमेशा मौजूद रहेंगे.

1 जनवरी 1951 को महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के मुरुड-जंजीरा में जन्मे विश्वनाथ पाटेकर ने तंगहाली बहुत करीब से देखी. उनके पिता का कारोबार डूबने के बाद परिवार आर्थिक संकट में आ गया था. नाना ने एक पुराने साक्षात्कार में बताया था कि किशोरावस्था में वे परिवार की मदद के लिए काम करने लगे थे. वह जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट से जुड़े और इसी दौरान रंगमंच की ओर उनका रुझान गहरा हुआ. रंगमंच ने उन्हें अभिनय की जमीन दी. बाद में विजया मेहता के निर्देशन में 'हमीदाबाईची कोठी' ने उन्हें व्यावसायिक रंगमंच पर पहचान दिलाई. 1978 की 'गमन' से उनका फिल्मी सफर शुरू हुआ. इसके बाद 'अंकुश', 'प्रतिघात', 'सलाम बॉम्बे!' और 'परिंदा' जैसी फिल्मों ने उनकी पहचान मजबूत की. 'परिंदा' के बाद वे हिंदी सिनेमा के प्रमुख अभिनेताओं में गिने जाने लगे.

वर्दी से रिश्ता

'प्रहार : द फाइनल अटैक' के लिए नाना ने लंबे समय तक सैन्य प्रशिक्षण लिया. उन्होंने करीब ढाई साल का प्रशिक्षण लिया था. फिर उन्हें कैप्टन का रैंक दिया गया था. बाद में वे टेरिटोरियल आर्मी से जुड़े और मानद लेफ्टिनेंट कर्नल के पद तक पहुंचे. 1999 के कारगिल युद्ध के दौरान उनके सेना से जुड़ने का भी उल्लेख मिलता है.

आम आदमी का गुस्सा, हंसी और दर्द

- 'क्रांतिवीर' का विद्रोही तेवर हो या 'परिंदा' की क्रूरता, नाना किरदार के पीछे खुद को गायब कर देते थे. 'खामोशी : द म्यूजिकल' में उन्होंने संवेदनशील पिता की भूमिका निभाई और 'अब तक छप्पन' में पुलिस अधिकारी का जटिल किरदार. 'वेलकम' और 'वेलकम बैक' में 'उदय शेट्टी' के रूप में उन्होंने अपने अभिनय का हास्य पक्ष दिखाया. 'राजनीति' में सत्ता और राजनीति के बीच उलझे चरित्र को निभाया, तो 'नटसम्राट' में बुजुर्ग रंगकर्मी गणपत बेलवलकर के अकेलेपन और टूटन को बेहद प्रभावशाली ढंग से पर्दे पर उतारा.

पर्दे के बाहर : नाम फाउंडेशन

- सितंबर 2015 में नाना पाटेकर और मराठी अभिनेता मकरंद अनासपुरे ने नाम फाउंडेशन की शुरुआत की. महाराष्ट्र में सूखे, जल संकट और किसानों की समस्याओं को देखते हुए शुरू हुई यह संस्था गांवों में पानी, कृषि और ग्रामीण विकास से जुड़े काम करती है.

रंगमंच और मराठी सिनेमा

- रंगमंच नाना की अभिनय यात्रा की पहली पाठशाला था. वह विजया मेहता और 'रंगायन' से जुड़े रहे. 'हमीदाबाईची कोठी' के अलावा 'महासागर' और 'पुरुष' जैसे नाटकों में भी उन्होंने काम किया. मराठी सिनेमा में भी उनकी मजबूत मौजूदगी रही. बाद के दौर में 'डॉ. प्रकाश बाबा आमटे : द रियल हीरो' और 'नटसम्राट' जैसी फिल्मों ने उनके अभिनय की दूसरी ऊंचाई दिखाई. 'डॉ. प्रकाश बाबा आमटे : द रियल हीरो' के लिए उन्हें फिल्मफेयर मराठी में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला.

सम्मान : तीन राष्ट्रीय पुरस्कारों का गौरव

- नाना पाटेकर को तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिले. 'परिंदा' के लिए 1990 में सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता, 'क्रांतिवीर' के लिए 1995 में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और 'अग्निसाक्षी' के लिए 1997 में सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला. फिल्मफेयर में भी उन्हें 'परिंदा' के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता, 'क्रांतिवीर' के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता तथा 'अंगार' और 'अपहरण' के लिए नकारात्मक भूमिका की श्रेणी में पुरस्कार मिले. 2013 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया.

नाना का परिवार

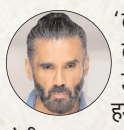
नाना पाटेकर के परिवार में नीलकांति और बेटा मल्हार पाटेकर हैं. नाना ने 1978 में नीलकांति से विवाह किया था. हालांकि, दोनों का वैवाहिक जीवन लंबे समय तक साथ नहीं रहा और बाद में वे अलग रहने लगे, लेकिन उन्होंने औपचारिक रूप से तलाक नहीं लिया. नाना के बेटे मल्हार फिल्मी दुनिया से जुड़े हुए हैं, लेकिन अपने पिता की तरह अभिनय में सक्रिय नहीं हैं. वह निर्देशन और फिल्म निर्माण के क्षेत्र में काम कर चुके हैं. नाना पाटेकर अपने निजी जीवन को हमेशा मीडिया की चमक-दमक से दूर रखते थे. उनका परिवार भी सार्वजनिक कार्यक्रमों और लाइमलाइट से दूरी बनाए रखता रहा है.

यकीन नहीं हो रहा...


नाना ने हर तरह के किरदार में खुद को साबित किया और पर्दे के बाहर भी लोगों की भलाई के लिए लगातार काम किया.
-रितेश देशमुख


नाना के साथ काम करने और उनसे सीखने का अनुभव हमेशा मेरे साथ रहेगा. उनके जाने की खबर बेहद दुखद व स्तब्ध करने वाली है.'
-अनुपम खेर


नाना की आवाज, अभिनय और हर किरदार में दिखने वाली सच्चाई उन्हें सबसे अलग बनाती थी.
-अक्षय कुमार


'वह एक शानदार कलाकार थे और उनकी कमी हमेशा महसूस होगी.'
-सुनील शेट्टी


'नट सम्राट चले गए. नाना पाटेकर जी का जाना कला जगत के लिए बड़ी क्षति है.'
-रवि किशन


'द अटैक्स ऑफ 26/11' में नाना पाटेकर का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता.'
-राम गोपाल वर्मा

संवाद, जो आज भी लोगों की जुबान पर

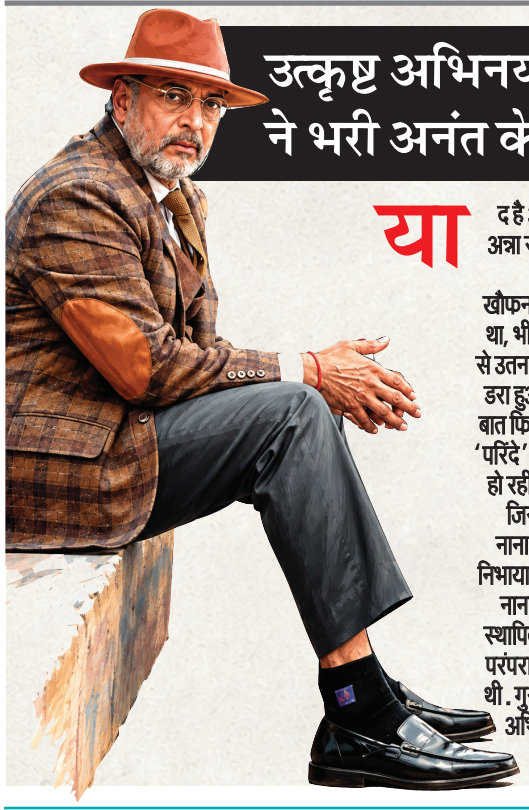
नाना सिर्फ अपने अभिनय ही नहीं, बल्कि दमदार संवाद अदायगी के लिए भी जाने जाते थे. उनके कई संवाद लोगों की जुबान पर चढ़ गए. 'क्रांतिवीर' में उनका संवाद 'आ गए मेरी मौत का तमाशा देखने?' आज भी याद किया जाता है. इसी फिल्म का एक और संवाद था, 'कुत्ते की तरह जीने की आदत पड़ गई है सबको...' 'तिरंगा' में नाना का संवाद 'अपना तो उसूल है... पहले लात, फिर बात, उसके बाद मुलाकात!' 'परिंदा' में उनका संवाद 'ये दुख नाम की बीमारी का इलाज किसी डॉक्टर के पास नहीं है... इसका इलाज खुद ही ढूंढना पड़ता है' भी उनके अभिनय की गहराई दिखाता है.

एक किरदार में नहीं बंधे

भारतीय सिनेमा के एक विलक्षण अभिनेता थे जिनकी पहचान उनकी जबर्दस्त आवाज, चेहरे के भाव, संवाद बोलने के ढंग और पर्दे पर दमदार मौजूदगी से होती है. उन्होंने हिंदी और मराठी सिनेमा में लगभग पांच दशकों तक अपने दमदार अभिनय की छाप छोड़ी.

नाना ने एक इंटरव्यू में बताया था, 'मेरी मां की एक सहेली थी, जो बिल्कुल उनकी बहन जैसी थी. बचपन में वो मुझे नाना-नाना कहा करती थी. बस यहीं से मेरा नाम नाना पाटेकर पड़ गया. उन्होंने सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट से शिक्षा प्राप्त की. अभिनय की दुनिया में आने से पहले उनका जीवन संघर्षों से भरा रहा. यही संघर्ष आगे चलकर उनके अभिनय की सबसे बड़ी ताकत बना. नाना पाटेकर ने अपने अभिनय जीवन की शुरुआत रंगमंच से की. रंगमंच ने उन्हें संवाद, देहभाषा, आवाज़ और भावनाओं पर नियंत्रण की सिखाया, जो बाद में उनके फिल्मी अभिनय की पहचान बना. नाना की विशेषता यह थी कि वे खलनायक को भी केवल 'बुरा आदमी' बनाकर प्रस्तुत नहीं करते थे वे उनके पात्रों के भीतर मौजूद असुरक्षा, क्रूरता और मानवीय कमजोरियों को अपने जीवंत अभिनय से सामने लाते थे. नाना पाटेकर की सबसे बड़ी विशेषता थी कि उन्हें किसी एक तरह के किरदार में नहीं बांधा जा सकता था. उन्होंने अपराधी, गैंगस्टर, पुलिस अधिकारी, सैनिक, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनेता, आम आदमी और हास्यपूर्ण चरित्र, हर तरह की भूमिकाएं डूब कर निभाईं. नाना की अभिनय क्षमता को समझने के लिये मराठी फिल्म 'नटसम्राट' की चर्चा करना जरूरी होगा. इस फिल्म में नाना पाटेकर ने एक वृद्ध रंगमंच अभिनेता का किरदार निभाया. यह भूमिका उनके अपने रंगमंचीय अनुभवों से भी कहीं गहराई से जुड़ती हुई प्रतीत होती है. एक ऐसे कलाकार की कहानी, जिसने पूरी जिंदगी मंच पर बिताई लेकिन जीवन के अंतिम दौर में अकेलेपन और उपेक्षा झेली. नाना को परदे पर देखकर लगता था जैसे अभिनेता नहीं, बल्कि वास्तविक किरदार सामने खड़ा होकर बात कर रहा हो. नाना पाटेकर केवल अभिनेता नहीं थे. उन्होंने लेखन और निर्देशन में भी अपनी प्रतिभा दिखाई. उनकी निर्देशित फिल्म 'प्रहार' उनके निर्देशकीय कौशल का शानदार उदाहरण है. उनके लिए सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं था. वह समाज, व्यवस्था, संघर्ष और मनुष्य की कमजोरियों को भी अपनी भूमिकाओं के माध्यम से सामने लाते थे.


डॉ. विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com



उत्कृष्ट अभिनय के 'परिंदे' ने भरी अनंत के लिए उड़ान

या द है आग से घिरा, चीखता-छटपटाता अन्ना सेठ? अंडरवर्ल्ड का डॉन और ड्रग डीलर, जो दूसरों के लिए जितना खौफनाक था, भीतर से उतना ही डरा हुआ. बात फिल्म 'परिंदे' की हो रही है, जिसमें नाना पाटेकर ने अन्ना सेठ का किरदार निभाया था. 1989 में आई इस फिल्म ने नाना को एक ऐसे अभिनेता के रूप में स्थापित किया, जिसकी अभिनय क्षमता परंपरागत नायक की छवि से कहीं आगे थी. गुरुवार तड़के उनके निधन के साथ अभिनय की दुनिया का एक विलक्षण अध्याय समाप्त हो गया.

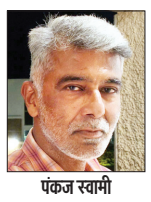

सूर्यकांत पाठक

'अन्ना सेठ' का चरित्र इसलिए भी चुनौतीपूर्ण था कि उसमें क्रूरता और भय दोनों साथ मौजूद थे. पत्नी की आग से हुई मौत के कारण वह पायरोफोबिया से ग्रस्त था. आग की लपटें देखते ही उसका आत्मविश्वास बिखर जाता था. नाना ने इस अंतर्विरोध को जिस स्वाभाविकता से पर्दे पर उतारा, उसने अन्ना सेठ को हिंदी सिनेमा के यादगार खलनायकों में शामिल कर दिया. 'परिंदे' के अंतिम दृश्य में वे आग से झुलस भी गए थे और इसके बाद उन्हें लंबे समय तक आराम करना पड़ा. नाना पाटेकर का फिल्मी सफर 1978 की 'गमन' से शुरू हुआ. इसके बाद 'अंकुश' ने उन्हें पहचान दी. पढ़े-लिखे बेरोजगार युवाओं और सामाजिक व्यवस्था के संघर्ष की कहानी में उनका अभिनय अलग नजर आया. आगे चलकर उन्होंने गंभीर भूमिकाओं के साथ हास्य और विविध चरित्र भी निभाए. मूल रूप से रंगमंच से जुड़े नाना बहुआयामी कलाकार थे. उन्होंने सर जेजे स्कूल ऑफ आर्ट में कला की शिक्षा ली और चित्रकारी भी की. रंगमंच का अनुभव उनके अभिनय में दिखाई देता था. वे किरदार को केवल निभाते नहीं थे, उसे अपनी देह, आवाज और भाव-भंगिमा में ढाल लेते थे. यही गुण उन्हें सत्यजीत रे जैसे फिल्मकार की नजर में भी खास बनाता था. नाना पाटेकर अब नहीं हैं, लेकिन उनके निभाए किरदार और अभिनय की छाप लंबे समय तक बनी रहेगी.

आवाज के पीछे का अकेला आदमी

नाना पाटेकर की आवाज़ में कुछ ऐसा था, जो संवाद खत्म होने के बाद भी खत्म नहीं होता था. वह पर्दे से निकलकर देर तक हमारे भीतर घूमती रहती थी, कभी गुस्से की तरह, कभी सवाल की तरह, कभी किसी घायल आदमी की चीख की तरह और कभी उस गहरी चुप्पी की तरह, जिसमें बहुत कुछ कहा जा चुका हो.

किसी अभिनेता की मृत्यु के बाद असली सवाल यह नहीं होता कि उसने कितनी फिल्में कीं, कितने पुरस्कार जीते या कितने किरदार निभाए. असली सवाल यह होता है कि उसके जाने के बाद हमारी स्मृति में क्या बचा? नाना के मामले में जवाब आसान है-एक आवाज. और उस आवाज के पीछे छिपा एक अकेला आदमी. नाना की आवाज कभी धीमी होकर खतरे का एहसास कराती थी और कभी अचानक इतनी ऊंची हो जाती थी कि लगता था जैसे संवाद नहीं, कोई भीतर जमा हुआ लावा फट पड़ा हो. लेकिन उनके गुस्से को केवल गुस्सा समझना भूल होगी. उसके भीतर अक्सर करुणा छिपी होती थी. वे जिन किरदारों को निभाते थे, वे प्राय: व्यवस्था से लड़ते हुए, अपने भीतर टूटते हुए या दुनिया से किसी तरह अपना हिसाब मांगते हुए लोग होते थे. उनके चेहरे पर कठोरता होती थी, लेकिन उसके पीछे एक गहरी असुरक्षा भी. शायद यही कारण है कि नाना के खलनायक भी पूरी तरह खलनायक नहीं लगते थे और उनके नायक भी पूरी तरह नायक नहीं. वे अपने किरदारों को सफेद या काला नहीं करते थे. उनके भीतर का धूसर संसार तलाशते थे.


पंकज स्वामी

नाना के किरदार अकेले क्यों थे

इस सवाल का कोई सीधा जवाब नहीं है. लेकिन शायद इसलिए कि नाना को भीड़ से ज्यादा मनुष्य का अकेलापन दिखाई देता था. उनके किरदारों के आसपास लोग बहुत होते थे, लेकिन भीतर वे अक्सर अकेले होते थे. अन्ना के पास सत्ता थी, लेकिन सुकून नहीं. प्रताप नारायण तिलक के पास आक्रोश था, लेकिन व्यवस्था से लड़ने की कीमत भी थी. 'नटसम्राट' के गणपतराव के पास पूरा जीवन था, लेकिन अंत में साथ देने वाला कोई नहीं था. और शायद यही नाना के अभिनय का सबसे मानवीय पक्ष था, वे आदमी की ताकत से ज्यादा उसकी दोरारों को पहचानते थे. नाना पाटेकर के जाने के बाद उनके बारे में बहुत कुछ लिखा जाएगा.

